बारहवें इमाम

हज़रते महदी आख़िरुज़्ज़माँ

(अज्जलल्लाहु तआला फरजहू)

आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी साहब

इमामे ज़माना पन्द्रह शाबान 225 हिजरी सामरा शहर में पैदा हुए आप (अ0) की वालिदा माजिदा का नाम नरजिस ख़ातून था और आपके वालिद इमाम हसन असकरी (अ0) थे आप (अ0) के वालिद ने पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के नाम पर आप (अ0) का नाम मुहम्मद रखा।

बारहवें इमाम महदी, क़ायम, इमामे ज़माना के नाम से मशहूर हैं। पैग़म्बरे अकरम (स0) ने बारहवें इमाम के मुताल्लिक़ इस तरह फरमाया हैः–

इमाम हुसैन (अ0) का नवाँ फ़रज़न्द मेरे हमनाम होगा उसका लक़ब महदी है उसके आने की मैं मुसलमानों को खुशख़बरी सुनाता हूँ।

हमारे तमाम अइम्मा ने इमाम महदी (अ0) के आने की बशारत और खुशख़बरी दी है और फरमाया है कि :–

इमाम हसन असकरी (अ0) का फ़रज़न्द महदी (अ0) है जिसके ज़ुहूर और फ़तह की तुम्हें खुशख़बरी देते हैं। हमारा इमाम महदी बहुत तवील ज़माने तक नज़रों से ग़ायब रहेगा एक बहुत तवील ग़ैबत के बाद ख़ुदा उसे ज़ाहिर करेगा और वह दुनिया को अद्ल व इन्साफ से पुर कर देगा।

इमामे ज़माना पैदाइश के वक़्त से ही ज़ालिमों की निगाहों से ग़ायब थे ख़ुदा व पैग़म्बरे इस्लाम (स0) के हुक्म से अलाहेदा ज़िन्दगी बसर करते थे सिर्फ बाज़ दोस्तों के सामने जो बा एतमाद थे ज़ाहिर होते थे और उनसे गुफ्तगू करते थे हज़रत इमाम हसन असकरी (अ0) ने अल्लाह तआला के हुक्म और पैग़म्बरे अकरम (स0) की वसिय्यत के तहत आप (अ0) को अपने बाद के लिए लोगों का इमाम मुअय्यन फरमाया।

इमामे ज़माना (अ0) अपने वालिद के बाद मन्सबे इमामत पर फाएज़ हुए और बचपन से ही उस ख़ास इरतेबात से जो वह ख़ुदा से रखते और अल्लाह ने उन्हें इल्म इनायत फरमाया था, लोगों की रहनुमाई और फ़राएज़े इमामत को अन्जाम दिया करते थे अल्लाह ने अपनी बेपनाह क़ुदरत से आप (अ0) को एक तवील उम्र इनायत फरमाई है और आप (अ0) को हुक्म दे दिया है कि ग़ैबत और पर्दे में ज़िन्दगी गुज़ारें और पाक दिलों को अल्लाह की तरफ रहनुमाई फरमाएँ अब हज़रत हुज्जत इमामे ज़माना नज़रों से ग़ायब और पोशीदा हैं लेकिन लोगों के दरमियान आमद व रफ्त करते है। और लोगों की मदद करते है और इज्तेमाआत में बग़ैर इसके कि कोई आपको पहचान सके शिरकत फरमाते हैं इस लिहाज़ से आप (अ0) पर जो अल्लाह ने ज़िम्मेदारी डाल रखी है उसे

अन्जाम देते हैं और लोगों को फैज़ पहुँचाते हैं और लोग भी उसी तरह जिस तरह सूरज में आ जाने के बावजूद इससे से फैज़ उठाते है आप (अ0) के वजूदे गिरामी से बावजूदे कि आप ग़ैबत में हैं फायदा उठाते हैं।

ग़ैबत और इमाम ज़माना (अ0) का ज़हूर

इमाम ज़माना (अ0) ग़ैबत उस वक़्त तक बाक़ी रहेगी जब तक दुनिया के हालात हक़ की हुकूमत कुबूल करने के लिए तैय्यार न हों और आलमी इस्लामी हुकूमत की बुनियाद के लिए मुक़द्दमात फराहम न हो जाएँ जब अहले दुनिया कसरते मसाएब और ज़ुल्म व सितम से थक जायेंगे और इमाम ज़माना (अ0) का ज़ुहूर खुदावन्दे आलम से तहे दिल से चाहेंगे और आप (अ0) के ज़ुहूर के मुक़द्दमात और अस्बाब फराहम कर देंगे उस वक़्त इमामे ज़माना (अ0) अल्लाह के हुक्म से ज़ाहिर होंगे और आप (अ0) उस कुव्वत और ताक़त के सबब से जो अल्लाह ने आपको दे रखी है ज़ुल्म का ख़ातमा कर देंगे और अमनो अमाने वाक़ई को तौहीद के नज़रिये की असास पर दुनिया में राएज करेंगे हम शीआ ऐसे पुरअज़्मत दिन के इन्तिज़ार में हैं और उसकी याद में जो दरहक़ीक़त एक इमाम और रहबरे कामिल की याद है अपने रुश्द और तकामुल के साथ तमाम आलम के लिए कोशिश करते हैं और हम हक़ पज़ीर दिल से इमाम महदी (अ0) के सआदत बख़्श दीदार की तमन्ना करते हैं और एक बहुत बड़े हदफे इलाही में कोशाँ है अपनी और आम इन्सानों की इस्लाह की कोशिश करते हैं और आप (अ0) के ज़ुहूर और फतह के मुक़द्दमात फराहम कर रहे हैं। □□□

जिसने महदी अ० का इन्कार किया है यक़ीनन उसने कुफ्र किया है।

(रसूले खुदा स0)